सन्मार्ग

भाषा अज्ञान से संवेदन की तैयारी भर है : अरुंधति रॉय

सम्पादकीय विचार 02

।। सन्मार्ग एक सर्वांग पूर्णपत्र नायक: सर्वजित ।।

शनिवार, 21 फरवरी 2015, वर्ष 68, अंक 313, पृष्ठसंख्या 23+04

अपनी भाषा ही सर्वश्रेष्ठ

आज मातृ भाषा दिवस है। बंगलादेश का यह गुह्य इसमें सी बहुतों के सीखा होगा और सभी को याद होगा। 22 जब विदेश मातृभाषा के लिए सही नहीं थी। आज हमारा देश भाषायी तौर पर अंग्रेजी का गुलाम है। हमारे यहां तो यह गलत लगता है कि 'जो अंग्रेजी नहीं पढ़ा वह है गधा।' हमारे बेटे के स्कूल में 'इंग्लिश मातृभाषा' की प्रवेशपरीक्षा होती है। एनवीएसएस टेलगेट के अनुसार ' अपनी भाषा में शिक्षा पाना अन्तर्निहित अधिकार है। मातृभाषा में शिक्षा दी जाए या नहीं इस तरह की पूर्वी सरकार की घोषणा है, उन्होंने कहा है कि अपनी मातृभाषा में शिक्षा पाने का अन्तर्निहित अधिकार भी इस आलमी देश में लगे और सरकार मुखालफत का शिकार बना हुआ है। उनकी मांगना थी कि जिस तरह इसने सी की गोल में पूरक लिया है, उसी तरह मातृभाषा को भी गोल में पूरक लिया है, दे दोनों भाषाएं इसरे लिए 'शासीय और अधिकारिक' हैं। रवीन्द्रनाथ ने मातृभाषा की महत्ता को समझा और उसके समझाने का प्रयास भी किया। उन्होंने ने इस संबंध में अनेक लेख लिखे हैं। उन्होंने ने कहा था कि विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा देना कांतिकारिक और साहसपूर्ण काम है। रवीन्द्रनाथ ने इसे शासन प्रणाली में बदलाव की जरूरत बताया था। उन्होंने ने कहा था कि विदेशी भाषा को अनावश्यक महत्व दिया जाना ही हमारी भाषा की अवनति का कारण है। उन्होंने ने कहा था कि विदेशी भाषा की अनावश्यक महत्ता ने हमारी मातृभाषा में रोड़ा उत्पन्न किया